तृतीय अध्याय

प्रीति सेनगुप्ता का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 जीवन परिचय

3.2 शिक्षा-दीक्षा

3.3 पारिवारिक पृष्ठभूमि

3.4 विवाह

3.5 कृतित्व

3.6 सम्मान

3.7 गुजराती यात्रा साहित्य के विकास में प्रीति सेनगुप्ता का योगदान

3.8 प्रीति सेनगुप्ता का साक्षात्कार

3. प्रीति सेनगुप्ता का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :-

3.1 जीवन परिचय : प्रीति सेनगुप्ता का जन्म 17 मई, 1945 को अहमदाबाद के एक रूढ़िवादी वैष्णव परिवार में हुआ था। माता कान्तागौरी धार्मिक एवं शांत स्वभाव की थीं। पिता रमणलाल आदर्शवादी सज्जन व्यक्ति थे। प्रीति सेनगुप्ता में इन पैतृक गुणों का एकदम सही मिश्रण देखने को मिलता है।

3.2 शिक्षा-दीक्षा : अहमदाबाद के प्रसिद्ध सेठ चिमनलाल नागिनदास विद्यालय, से 1961 मे एस.एस.सी, 1965 में गुजरात कॉलेज से अंग्रेजी मेजर और संस्कृत माइनर से बी.ए. किया। और 1967 में गुजरात विश्वविद्यालय के भाषा भवन से अंग्रेजी विषय के साथ भाषा विज्ञान में एम.ए. किया। उसके बाद उन्होंने कुछ समय तक अहमदाबाद के प्रसिद्ध उच्च शिक्षा संस्थान, हरिवल्लभदास कालिदास महाविद्यालय में अंग्रेजी के व्याख्याता के रूप में काम किया। अंग्रेजी विषय में और अध्ययन करने की उनकी इच्छा और लगन से वे 1969 में अंग्रेजी की पढ़ाई के लिए अमेरिका गयी। शुरुआत के दिनों में, प्रीति सेनगुप्ता को लगता है कि अमेरिका में सब कुछ अलग है, क्योंकि यह किसी भी देवता का देश नहीं था। लेकिन धीरे-धीरे यात्राओं के द्वारा अमेरिका और दुनिया के प्रति दृष्टिकोण बदलने लगा। लेखिका अमेरिका में एक फ्रेंसी महिला कॉलेज में अध्ययन करने वाली एकमात्र विदेशी छात्रा थी। ज्यादातर लड़कियां स्थानीय थी। कुछ घर से आती थी और कुछ हॉस्टल में रहती थी। कक्षा में चार या पांच लोगों के साथ अच्छी दोस्ती हो गयी।

3.3 पारिवारिक पृष्ठभूमि : प्रीति सेनगुप्ता के परिवार में, उनके जन्म के पहले से ही कई दिलचस्प गतिविधियाँ थीं। परिवार के सदस्यों में संगीत, चित्रकला, अध्ययन, यात्रा के प्रति गहरी रुचि थी। परिवार के सदस्य समय-समय पर नाटक-रंगमंच देखने के लिये अनेक स्थलों पर जाया करते थे। और अक्सर नौकर-चाकरों के साथ देश के सुदूर स्थानों की यात्रा करते थे जहाँ अभी तक सड़कें भी नहीं बनी थीं। घर में समय समय पर संगीत संध्याएं भी होती रहती हैं, और सभी उनमें हिस्सा लेते हैं। उन्होंने घर पर कढ़ाई, कैमरा-कला, चमड़े का काम, खेल आदि पर जोर दिया। साथ ही सीखने के लिए एक पोषक वातावरण भी निर्मित किया गया। ऐसे ही कई अन्य रचनात्मक और दिलचस्प पहलुओं से समृद्ध प्रीति सेनगुप्ता को यह संस्कार बचपन से ही मिला। प्रीति सेनगुप्ता का बचपन बिना किसी परेशानी के आराम से सारी सुविधाओं मे बीता है।

प्रीति सेनगुप्ता को बचपन से पढ़ने लिखने का बहुत शोख था, इसलिए वह जन्मदिन के उपहार मे परिवार तथा मित्रों से पुस्तकों का आग्रह रखती थी। इस संदर्भ मे डॉ. बिपिन चौधरी लिखते है– "जन्मदिन नहीं भेट मां पुस्तकोंनो ज आग्रह राखे। वाचन ज सौथी मनगमती प्रवृत्ति बनी रहेली, आगड़ जता वृत्ति तो अेवी चाली के पुस्तकों मुकवानी जग्या घरमां खुटती गई, पुस्तकालयनां उपयोगमां दाह्यापन वरतायु।"[1] आगे चलकर लेखिका मे पढ़ने की वृत्ती का और विकास हुआ। अब वह गुजराती के बड़े-बड़े लेखकों काका कालेलकर, कनैयालाल मुंशी, कृष्णमूर्ति को पढ़ने लगी थी। जिससे उनकी साहित्यिक समझ विकसित होने लगी थी। प्रीति सेनगुप्ता ने कनैयालाल मुंशी का उपन्यास 'गुजरातनो नाथ' पढ़ने के बाद इतनी प्रभावित हुई कि उन्होंने कनैयालाल मुंशी को एक पत्र भी लिखा, जो उनके चाचा के करीबी थे। उनसे मित्रता के संबंध थे, और उनके चाचा पी.जी. शाह, जो गुजरात रिचर्स सोसाइटी के अध्यक्ष थे। उन्होंने एक पत्र भी लिखा था। चाचा ने कनैयालाल मुंशी से एक भेंट मुलाकात भी कराई। उसके बाद पढ़ने का शौक इस हद तक प्रभावित किया कि, गुजराती साहित्य के अलावा हिंदी और अंग्रेजी भाषा की किताबें भी उनके मूल रूप में पढ़ी जाने लगीं। अत: इस काल में मराठी, बांग्ला, रूसी भाषा में कुछ रचनाओं के अनुवाद भी पढ़े। प्रीति सेनगुप्ता ने बचपन में मार्को पोलो, कोलंबस, वास्को डी गामा जैसे विश्व यात्रियों के बारे में खूब पढ़ा था। यह कहना उचित होगा कि इन महान यात्रियों से प्रेरणा प्राप्त करने के बाद वह यात्रा की ओर अधिक उन्मुख हो गयी।

बचपन से ही परिवार के साथ घूमने-फिरने का मौका प्रीति सेनगुप्ता को मिला । उस समय कहीं घूमने का नियोजन अगर नहीं बनता तब भी तो माउंट आबू और मुंबई सबसे अच्छे और नजदीक के प्रवास स्थान हुआ करते थे। ऐसे में एक बार मां कांताबेन अपनी छोटी बेटी को अकेले यात्रा पर ले गई। लेखिका पहली हवाई यात्रा जो मुंबई की यात्रा थी, उसका वर्णन इस तरह करती हैं "एकवार मोटा भाईअे बननें नानी बहेनोंने विमानमा मुंबई मोकलवानी होंश करी। जिंदगीनुं पहेलुं उड़यन शरमाता शरमाता बैठेलां।"[2]

यहाँ दोनों बहनों को बड़े भाई ने विमान से पहली बार मुम्बई की यात्रा कराई जिसमे वे बहुत शरमा रही थी। ये जीवन का पहला किस्सा था। स्कूल द्वारा आयोजित प्रवास में वर्ग के विद्यार्थियों के साथ भ्रमण पर जाना भी खूब प्रिय था। स्कूल से एक पत्रिका प्रकाशित होती थी जिसमे युवा बच्चों को लेखन की प्रवृति से जोड़ा जाने का प्रयास किया जाता था। स्कूल की पत्रिका में प्रीति सेनगुप्ता के कुछ यात्रावृत्तांत भी प्रकाशित हुए। जो उनकी पहली मौलिक रचना है। प्रीति सेनगुप्ता इतना अधिक लिखती थी की, स्कूल की पत्रिका में एक ही नाम से दो लेख छापना ठीक नहीं रहेगा सोचकर, शिक्षक नंदलालभाई ने प्रीति सेनगुप्ता

को 'प्रियदर्शनी', प्रीति उपनाम दिया। प्रीति सेनगुप्ता ने 'असंभव' की उपाधि 'नामुमकीन' भी धारण की। कॉलेज के दौरान भी उनका लेखन जारी रहा। एक अंग्रेजी अखबार में कुछ कॉलम लिखे। कई कविताएं प्रीति सेनगुप्ता ने उस समय लिखी हैं। उन्होंने कॉलेज प्लेसमेंट प्रतियोगिता में भाग लिया और अनेक पुरस्कार जीते। इस प्रकार स्कूली दिनों से ही पढ़ने-लिखने में गहरी रुचि लेखिका में थी।

3.4 विवाह : न्यूयॉर्क, अमेरिका में कॉलेज के दिनों में प्रीति सेनगुप्ता की 'चंदन सेनगुप्ता' से दोस्ती हुई। चंदन सेनगुप्ता मूल रूप से बंगाली भारतीय है। इस संदर्भ मे डॉ. बिपिन चौधरी लिखते है- "न्यूयॉर्कमां एक बिजी मैत्री जामी कलकत्ताना बंगाली बाबू चंदन सेनगुप्ता साथे। चंदन सेनगुप्ताअे लग्ननो प्रस्ताव मुक्यो। प्रीति सेनगुप्ताने खात्री हती के आवो छोकरो अहमदावादमां- गुजरातमां नहीं मड़े, तेथी प्रस्ताव स्वीकार्यो ने प्रीति-चंदननी मैत्री लग्नमां परिणामी। आम अहमदावादनां प्रीति शाह, प्रीति सेनगुप्ता बनी न्यूयॉर्कमां स्थाई थयां।"[3] चंदन सेनगुप्ता और प्रीति सेनगुप्ता की मित्रता होने के बाद चंदन सेनगुप्ता ने लेखिका के सामने शादी का प्रस्ताव रखा। प्रीति सेनगुप्ता को यकीन था कि अहमदाबाद-गुजरात में ऐसा लड़का उन्हे नहीं मिलेगा। इसलिए उन्होंने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और प्रीति-चंदन की दोस्ती शादी में बदल गई। इस प्रकार अहमदाबाद की प्रीति शाह प्रीति सेनगुप्ता बन गईं और न्यूयॉर्क में बस गई। चंदन सेनगुप्ता एम.एस., एम.बी.ए. और इंजीनियरिंग में पीएच.डी. जैसी उन्नत डिग्रियाँ प्राप्त कर चुके है। वर्तमान मे चंदन सेनगुप्ता न्यू यॉर्क मे डॉक्टर है। पढ़ाई में आगे बढ़ने के साथ-साथ दोनों की शिक्षा के क्षेत्र में भी गहरी रुचि है। दोनों को बंगाली संगीत का खूब शौक है।

लेखिका स्वीकार करती है की इतने देशों की यात्रा कर पाना इसलिए संभव हुआ, क्योंकि मुझे चंदन सेनगुप्ता का पूरा साथ मिला। लेखिका लिखती हैं- "मारू बधूं ज मारा वरना पीठबढ़ने लीधे शक्य बन्यूं छे। जो अे मारा जीवनमां होत नहीं, तो मारुं आवुं जीवन होत नहीं। अेने मने सरस घर आप्युं, ने उदारता अेवी के मने आंखुं विश्व मड़वा दीधुं।"[4] लेखिका कहती है, मेरे पति के समर्थन के कारण सब कुछ संभव हो गया है। अगर ये मेरे जीवन में न होते, तो आज मेरी जिंदगी कुछ और होती। जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकती। उसने मुझे एक अच्छा घर दिया, और वह इतना उदार था कि उसने मुझे पूरी दुनिया दे दी। चंदनभाई ने अपने नाम को सार्थक कर दिया है। प्रीति सेनगुप्ता के साथ-साथ उनकी खुशबू भी दूर-दूर तक फैली हुई है। वह अमेरिकी विश्वविद्यालयों में एम.बी.ए पाठ्यक्रमों में प्रोफेसर के रूप में भी कार्य करते हैं।

लेखिका 'पूर्वा' पुस्तक में दाम्पत्य जीवन पर, पति-पत्नी के प्रेम की समझदारी के लिए लिखती है की, "फरवा निकड़ी पड़वानो कोई रोग होय तो ते कबूल करूं छु, साथे अे पन जानूं छू के अेनो कोई प्रतिकार

नथी। ने तेथी ज, घणी वार थाय छे के घर पड़तु मूकयु छे, वरने अेकलो मुकयो छे– जेवी दोषभावना अनुभव्या वगर संपूर्ण मुक्त बनी जवुं ते कई खोटु नथी। बंधननी अगत्य त्यारे ज समजाय ने।"[5] लेखिका घर से अकेले निकल कर यात्रा करने को एक रोग मानती है वह कई बार घर छोड़कर जाना पति को अकेले छोड़कर जाना इन भावों से स्वयं को दोषी घोषित नहीं करती है उन्हें कभी ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि वह अपने घर अपने पति के साथ अन्याय कर रही है लेखिका का मानना है कि घर परिवार को छोड़कर संपूर्ण रूप से मुक्त होकर घूमने यात्रा करना कोई गलत भावना नहीं है उनके अनुसार दांपत्य जीवन का महत्व तभी ज्ञात होगा जब आप एक दूसरे से कुछ समय के लिए अलग हो जाए या कहीं दूर चले जाए तभी पति-पत्नी एक दूसरे के महत्व और प्रेम भाव को समझ सकते हैं।

प्रीति सेनगुप्ता एक विशेष यात्रा लेखिका है जो अन्य यात्रियों से एकदम भिन्न है। उनकी यात्राओं में केवल एक हवाई अड्डे से दूसरे हवाई अड्डे की जानकारी या वहां का वर्णन शामिल नहीं है। प्रीति सेनगुप्ता साधारण यात्रा लेखन की तरह भी नहीं है जो यात्रा पर जाने से पहले टूरिस्ट रिजॉर्ट बुक करते हैं आने-जाने की सुविधा को प्राथमिकता देते हैं। रोजमर्रा की जीवन शैली के थकान से ऊबकर तथा थकान को दूर करने के लिए यात्राओं का आयोजन करते हैं। इसके विपरीत लेखिका पहले से कोई नियोजन नहीं करती है जिस किसी देश प्रदेश में जाती है वहां के लोकल परिवहन, ट्रांसपोर्टेशन का उपयोग करती है। उनके इस तरह के प्रयास से लेखिका के व्यक्तित्व में साहसिकता का भाव झलकता है। लेखिका हस्तकला से बनी वस्तुओं एवं उन्हे बनाने वालों का बहुत सम्मान करती है। अपनी यात्राओं के दौरान अगर उन्हे सबसे ज्यादे कोई वस्तु खरीदने की इच्छा हो तो वह हस्तकला से बनी वस्तुओं को ही खरीदती है। लेखिका कहती है- "खरीदी करवा जवानी मझा मने बहारगाममां ज आवे छे, कारण के प्रवासना अे एक अंगरूप होय छे। ने ते पन अेवा ज देशोमां ज्यांनां बजारमां रंगनी रेलमछेल होय, हस्तकडानी वस्तुओनुं बाहुल्य होय, प्रजाना जीवननी कोई आकर्षक लाक्षणिकता होय। इजिप्तनां शहेरोनां बजारोमां आ बधु ज मड़े- मेक्सिको, मोरक्को, इटली, ग्रीस, चीन वगेरे देशोमां मड़े तेम।"[6] प्रीति सेनगुप्ता मानती है कि यात्रा के दौरान खरीदी गई वस्तुएं यादगार होती है। जिस किसी देश में भ्रमण करते हैं, उससे जुड़े संस्मरण के लिए वह वस्तुएं उपयोगी होती है। किसी देश के बाजार में हाथों से बनी हुई चीज हो तथा उसमें भी अनेक प्रकार की वस्तुएं विभिन्न रंगों के विकल्प हो तो खरीदारी करने में आसानी होती है, और लेखिका हस्तकला से निर्मित हुई वस्तुओं के महत्व को समझती है। प्रीति जी का मानना है की हस्तकला से बनी

चीजे उस देश के समाज का चित्रण अपनी कला में प्रस्तुत करते हैं। इसलिए ऐसी चीजों को वस्तुओं को लेखिका खरीदना व संभालकर रखना चाहती है।

3.5 कृतित्व : प्रीति सेनगुप्ता का साहित्य समृद्ध है, लेखिका ने साहित्य की सभी विधाओं मे अपनी कलम चलाई है। पिछले पाँच दशक से प्रीति जी लेखन पठन का कार्य कर रही है। लेखिका प्रीति सेनगुप्ता का साहित्य विविधताओं से भरा नजर आता है। वर्तमान मे यह गुजराती साहित्य की बहुत ही ख्याति प्राप्त लेखिका है। भारत की पहली महिला है जिसने नॉर्थ पॉल की यात्रा की है। इनके लेखन के महत्त्व को रेखांकित करते हुए रघुवीर चौधरी जी लिखते है- "प्रीति मां संशोधक थवानी योग्यता तो छे ज। रमणलाल शाहनु, प्रवास वर्णन प्रसंग प्रधान होय छे, भोढ़ाभाईनु प्रवास वर्णन साहित्य अने कला केंद्रित होय छे तो प्रीतिनु प्रवास वर्णन समाजलक्षी होय छे।"[7]

प्रीति सेनगुप्ता का साहित्य अनेक विधाओं में विस्तृत है लेकिन सबसे ज्यादा लेखिका जहाँ ठहर कर लगातार लिख रही है वह है यात्रा साहित्य। यात्रा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए लेखिका कहती है- "प्रवास माटे एक प्रकारनी प्रकृति जोइअे। मननु एक जातनु बंधारण, वलण, धीरे-धीरे थयेलूं घडतर। प्रवास फक्त मजा माटे ज नथी होतो। पोताना रोजिंदा जीवननी बहार निकढीने बीजाना जीवनना यतकिंचित अंश बनवानु होय छे।"[8]

अपने प्रवास के दौरान लेखिका अनावश्यक रूप से किसी से कहीं भी कोई बात नहीं करती है। लेकिन बात-बात में चुपचाप वहाँ की सब खबर ले लेना उसे बखूबी आता है वे कहती है कि- "अंगत प्रश्नों पूछवानी मने टेक पन नथी। वात करतां करतां, ने निरीक्षण करीने घणु समजाई जतू होय छे।"[9]

लेखिका को यात्राओं से इतना लगाव है कि वे कहीं भी जाए उन्हे कोई भी जगह एकदम अनजानी नहीं लगती है। वे कहती है कि- "जवुं गमे छे, कारण के ज्यां जाऊं छु त्या मढे छे आवकार फरी फरी। नवी जग्या अजाणी नथी लागती, ने जोयेली जग्या जूनी नथी लागती। जो मनथी थाकुं तो जनती ने स्थानोथी थाकुं ने?"[10]

लेखिका अपनी नार्थ पोल की यात्रा के बाद ऐसा मानती है कि अब वह पूरी दुनिया देख ली है अब उसे और कुछ देखना बाकी नहीं है। वह कहती है कि "हुं खरेखर अेम मानती हती के आ पछी प्रवासी तरीके हुं संपूर्ण थईश।"[11]

लेखिका का सृजन अत्यंत व्यापक है। उनके द्वारा प्रकाशित रचनाएं निम्नलिखित है।

काव्य संग्रह : 1) जुइनूं झुमखुं 1982, 2) खंडित आकाश 1985, 3) ओ जुलियट 1994, 4) सात खंड, सातसौ इच्छा 2000, 5) बेतरफी प्रेम 2011, 6) अकारण हर्षये 2017,

ललित निबंध संग्रह : घर थी दूरनां घर 1990, उत्तर ध्रुवनुं आकर्षण 1996, नित नवा वंटोड 1999, स्थढांतर 2003, महानगर 2005, निजाकृति 2014

कहानी संग्रह : 1) एक स्वप्ननो रंग 2004, 2) रंग रंगनो स्नेह 2020

उपन्यास : 1) बे कांठानी अधवच 2017, 2) आमंत्रित 2021

बंगाली साहित्य से अनुवाद : 1) मननुं मानस 2013, 2) अंत प्रेमनो प्रेम 2014 3) निःसंग सम्राट 2016, 4) फक्त निमित्त 2021

अंग्रेजी पुस्तक : English Prose Works:

1. Joy of Travelling Alone 1992

2. White Days, White Nights 1993 (Magnetic North Pole account)

3. My Expedition to the Magnetic North Pole - 1996 (for NBT, Bal Pustakalaya)

English Poetry Collection:

1. A Petal at a Time 2007

OUR INDIA - Photography (480 photos of mountains, monuments and Moments in India)

यात्रा साहित्य :

'पूर्वा' : यह प्रीति सेनगुप्ता की प्रथम रचना है जो आर. आर. सेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद से सन 1986 में प्रकाशित हुई है। इसमें कुल तेरह खंड है। प्रस्तुत यात्रावृत्तांत में विभिन्न देशों की यात्रा का चित्रण लेखिका ने किया है। तथापि उन देशों के बीच, घनिष्ठ संबंध भी है। एशिया, अफ्रीका और यूरोप के

पूर्वी भाग के विभिन्न देशों के इतिहास, धर्म, संस्कृति, भूगोल, लोक जीवन और व्यवस्था जैसे पहलू प्रस्तुत रचना में प्रमुखता से उभरे हैं।

'दिक् दिंगत' : यह प्रीति सेनगुप्ता की दूसरी रचना है जो आर. आर. सेठनी कंपनी अहमदाबाद प्रकाशन से सन 1987 में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल ग्यारह खंड है। दिक् दिंगत यात्रावृत्तांत फिलीपींस, थाइलैंड, पेरिस, स्पेन, मोरोक्को के यात्राओं पर आधारित है। यहां उन्होंने विभिन्न देशों की यात्राओं के साथ-साथ अपने अनुभवों से प्राप्त निष्कर्षों के माध्यम से समाज, संस्कृति और प्रकृति का वर्णन किया है। लेखिका ने अमेरिका, फिलीपींस, फ्रांस, थाईलैंड, स्पेन, अफ्रीका, इंडोनेशिया और जमैका जैसे देशों के सुप्रसिद्ध और कई अज्ञात शहरों और गांवों में अपने यात्रा अनुभवों का वर्णन किया है। इस यात्रावृत्तांत में स्थानीय कस्बों, इमारतों, चर्चों, संग्रहालयों, उद्यानों, कैफे, रेस्तरां आदि के साथ-साथ प्राकृतिक स्थलों के सौंदर्य, सांस्कृतिक लोक जीवन का भी वर्णन किया गया है। लेखन की शैली से पाठक देश-प्रदेश के इतिहास के साथ-साथ उसके भूगोल से भी परिचित हो जाता है, तथा लेखक के साथ-साथ प्रकृति की सुन्दरता एवं ऐतिहासिक स्मारकों की सुन्दरता का भी आनन्द उठाता है।

'सूरज संगे, दक्षिण पंथे' : यह प्रीति सेनगुप्ता की तीसरी रचना है जो आर. आर. सेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद से सन 1989 में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल 41 खंड है। प्रस्तुत यात्रा संग्रह 'दक्षिण अमेरिकी' देशों की यात्राओं का पर आधारित है। लेखिका की यात्रा जमैका से शुरू होकर मैक्सिको में ख़त्म होती है। इस यात्रा के दौरान देश, संस्कृति का शायद ही कोई ऐसा पहलू हो जिस पर लेखिका ने ध्यान न दिया हो। चूंकि इसमें विभिन्न देशों का विस्तृत वर्णन है, इसलिए यहां उन देशों के शहरों की विशेषताओं और सीमाओं का वर्णन किया गया है। पुस्तक के शुरुआती अध्याय में, यात्रा की तैयारी से लेकर, विभिन्न देशों के दूतावासों की कार्य प्रणाली और परमिट प्राप्त करने के उनके तरीकों से परिचित कराया गया है।

'अंतिम क्षितिजों' : यह प्रीति सेनगुप्ता की चौथी रचना है जो आर. आर. सेठनी कंपनी अहमदाबाद प्रकाशन से सन 1991 में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल पैतालीस खंड है। यह यात्रा लेखिका की ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड देशों से संबंधित है। प्रीति सेनगुप्ता ने इस देशों का जिज्ञासु दृष्टि एवं सूक्ष्मता से अवलोकन किया है। वे इस स्थलों के बारे में सिर्फ भौगोलिक, ऐतिहासिक या परिचयात्मक जानकारी ही उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं रहते। लेकिन वे उस क्षेत्र की प्रकृति, संस्कृति और जीवन की जीवंत पहलुओं को पकड़ते है। लेखिका अन्य पर्यटकों को, यात्रीओं के लिए मार्गदर्शक बनने की प्रवृत्ति से दूर

रही हैं। अपने यात्रा अनुभवों के माध्यम से उन्होंने पाठक के समक्ष यात्रा की अनूठी प्रकृति का स्पष्ट एवं यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत किया है। जिससे यात्रा की रोचकता बढ़ती है।

'धवल आलोक, धवल अंधार' : यह प्रीति सेनगुप्ता की पाँचवीं रचना है जो आर. आर. सेठनी कंपनी अहमदाबाद प्रकाशन से सन 1992 में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल पाँच खंड है। प्रस्तुत यात्रावृत्तांत अंटार्कटिका यात्रा पर आधारित है। लेखिका का साहस एवं रोमांच प्रियता इस यात्रा में दृष्टिगोचर होता है। अंटार्कटिका यात्रा के दौरान उनके जहाज के साथ अकस्मात होता है और सभी यात्री जहाज के आगे वाले हिस्से में पहुंच जाते है। सभी को 'रक्षा नाव' में बिठाया जाता है। 'रक्षा नाव' में कूदते समय लेखिका के जैकेट की एक रस्सी स्टीमर में फंस जाती है और क्षणिक भर के लिए उन्हें लगता है कि, अब क्या होगा। लेकिन इस साहसी यात्री को अनेक यात्राएं करनी थी। इसलिए वह सही सलामत, 'लाइफ सेविंग' बोट में बैठ जाती हैं। इस तरह मौत को सामने से देखना बहुत ही भयभीत था। लेखिका ने इस घटना का वर्णन सूक्ष्मता से किया है, जो इस यात्रावृत्तांत की रोचकता को और बढ़ा देता है।

'मन तो चंपानुं फूल' : यह प्रीति सेनगुप्ता की छठी रचना है जो आर. आर. सेठनी कंपनी अहमदाबाद प्रकाशन से सन 1993 में प्रकाशित हुई है। इसमें कुल पैतीस खंड है। प्रस्तुत यात्रावृत्तांत में थाईलैंड, मलेशिया और वियतनाम का वर्णन है। लेखिका की इच्छा तो भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों असम, मणिपुर, नागालैंड, सिक्किम, यात्रा पर जाने की है, लेकिन वहां की राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थिति के कारण वहां जाना सुरक्षित नहीं था। उनके पति चंदन सेनगुप्ता की इच्छा थी की, लेखिका कोई सुरक्षित स्थान की यात्रा करें। इसलिए लेखिका ने थाईलैंड, मलेशिया और वियतनाम की यात्रा पर जाना तय किया। प्रीती सेनगुप्ता का लेखन कौशल एवं उनकी सूक्ष्म निरीक्षण वृत्ति इस यात्रा को अद्भुत बना देती है। लेखिका ने इस यात्रावृत्त में प्रकृति के सुंदर दृश्यों का चित्रण किया है तथा ऐतिहासिक स्थलों का वर्णन सरल सीधी भाषा शैली में किया है।

'उत्तरोत्तर' : यह प्रीति सेनगुप्ता की सातवी रचना है जो आर. आर. सेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद से सन 1994 में प्रकाशित हुआ है। आप कितने भी बहादुर हो, गहन निश्चयी और तीव्र इच्छा शक्ति वाले हो, लेकिन 'उत्तर ध्रुव' की यात्रा तभी सफल हो सकती है, जब भाग्य देवता का आप पर आशीर्वाद हो। प्रस्तुत यात्रा में लेखिका ने उत्तर ध्रुव पर पाए जाने वाले 'प्राणियों' का बारीकी से वर्णन किया है। जिसमें सफेद भालू, छोटे-छोटे सफेद खरगोश, सफेद लेमिंग, बड़े-बड़े महाकाय प्राणी मस्क-औकसन, हस्की कुत्ता, 'करीबू हिरण' विविध दरियाई जीवों का वर्णन यहां पर देखने को मिलता है।

'किनारे किनारे' : यह प्रीति सेनगुप्ता की आठवीं रचना है, जो सन 1995 में प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत यात्रावृत्त लेखिका की भोगोलिक प्रियता पर आधारित है। इटली अपने अतीत के वैभव के साथ अनोखे ढंग से जुड़ा हुआ देश है और यही कारण है। जिसे देखने के लिए अधिकांश पर्यटक घुम्मकड़ वहां जाते हैं। जिनमें प्रीति सेनगुप्ता भी शामिल हैं। ट्यूनीशिया आने वाले यात्री कम हैं। वहाँ पौराणिकता के कुछ चिह्न हैं, लेकिन लेखिका की रुचि अरब-भूमध्यसागरीय भूगोल तथा वहाँ की परंपरा और आधुनिकता की स्थिति को देखने, समझने की है। लेखिका इस मध्य जगह पर इसलिए जाना चाहती है, क्योंकि वहां इटली और ट्यूनीशिया के बीच स्थित द्वीप 'सिसिली' की दोनों संस्कृतियों-अतीत का विवरण मिलता है।

'दुरनो आवे साद': यह प्रीति सेनगुप्ता की नौवीं रचना है, जो सन 1998 में प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत यात्रावृत्तांत को दो भागों मे बाटा गया है। प्रथम हिस्से में फिनलैंड, स्वीडन, रूस, यूक्रेन, और उज्बेकिस्तान के स्थान का वर्णन है तथा दूसरे हिस्से में अलास्का के विविध स्थानों का प्रवास वर्णन है। प्रथम भाग में फिनलैंड, स्वीडन, रसिया, यूक्रेन, और उज्बेकिस्तान के विविध स्थानों का विस्तृत वर्णन किया है। वहां के इतिहास, भूगोल, म्यूजियम, स्थापत्य, लोक संगीत, लोक नृत्य, पोशाक, शादी-विवाह के रीति रिवाज, वहां बोली जाने वाली भाषा इन यात्रा के तत्वों का विश्लेषण लेखिया ने किया है।

'देश-देशावर' : यह प्रीति सेनगुप्ता की दसवीं रचना है जो सन 1998 में प्रकाशित है। प्रस्तुत यात्रावृत्त में लेखिका भारत के गोवा से यात्रा कि शुरूआत करती है। और बर्मा, जर्मनी, अर्जेंटीना, न्यू मैक्सिको, पुर्तगाल, फिजी होकर दक्षिण अफ्रीका में पूर्ण होती है। इस पुस्तक मे लेखिका के विविध लेख है जो समय समय पर देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

'एक पंखीनां पींछां सात' : यह प्रीति सेनगुप्ता की ग्यारहवीं रचना है, आर. आर. सेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद से सन 2000 में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल तेईस खंड है। प्रस्तुत यात्रावृत्तांत सात मध्य अमेरिकी देशों पर आधारित है। ये सात देश हैं: बेलीज़, ग्वाटेमाला, अल साल्वाडोर, होंडुरास, निकारागुआ, कोस्टा रिका और पनामा। एक ही भूमि पर स्थित होने के बावजूद, इनमें से प्रत्येक देश का व्यक्तित्व अलग है। खूनी इतिहास वाले इन छोटे देशों के लोग भी विविध मानसिकता वाले हैं। ये देश, जो वर्षों तक ब्रिटिश और स्पेनिश शासन के अधीन रहे, बीसवीं सदी के मध्य में ही स्वतंत्र हुए।

वहां सांप्रदायिक दंगों और सरकार के खिलाफ विद्रोह की आग अभी तक बुझी नहीं है। दुनिया के अन्य भागों में भी बंदूकें और पिस्तौलें उतनी ही दुर्लभ हैं जितनी इन देशों में। प्रीति सेनगुप्ता बहादुरी से उन

जगहों पर जाती हैं जहां, श्वेत पर्यटक यात्रा करने से डरते है। मध्य अमेरिकी देशों के वर्णन में यात्रा के विविध तत्व उभर कर आये है, जिसमें इतिहास, भूगोल, धर्म, संस्कृति, लोक जीवन और राजनीति के सभी पहलू शामिल हैं। प्रीति सेनगुप्ता का अदम्य उत्साह, उनकी घुमक्कड़ी साहसिकता के साथ मिलकर, यात्रा-वृत्तांत को जीवंत और गतिशील बनाए रखता है। लेखिका इन देशों मे पूरे बावन दिनो तक यात्रा करती है और अपने प्रत्यक्ष अनुभवों को कलमबद्ध करती है।

'नमणी वहे छे नदी' : यह प्रीति सेनगुप्ता की बारहवीं रचना है जो आर. आर. सेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद से सन 2000 में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल 48 खंड है। लेखिका चीन देश की यात्रा दो बार करती है, दूसरी बार जब वह चीन जाती है तब उसमें ग्यारह वर्ष का अंतराल होता है। इन ग्यारह वर्षों के अंतराल में चीन में अनेक बदलाव लेखिका देखती है, उस समग्र परिवर्तन का वर्णन इस यात्रावृत्तांत में देखने को मिलता है।

'रीझो रे दरिया-देव' : यह प्रीति सेनगुप्ता की तेरहवीं रचना है, जो सन 2001 में प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत यात्रा ग्रीस देश पर आधारित है। यात्रा के दौरान लेखिका एक महीने तक ग्रीस देश के भिन्न-भिन्न जगहों पर जाती है। ग्रीस के 1425 द्वीपों में से 6 दीपों पर लेखिका जाती है और वहां पर 16 से 17 दिनों तक समाज व्यवस्था को समझने का प्रयास करती है। स्थानीय लोगों में जाकर उनके जीवन शैली को नजदीक से देखती है। उन स्थलों की बारीक से बारीक जानकारी लेखिका अपनी इस पुस्तक में देती है। इतिहास के साथ-साथ वर्तमान जीवन पद्धति की सारी बाते इस पुस्तक में देखने को मिलती है। जो यात्रा साहित्य को समृद्ध करता है।

'नूरना काफला' : यह प्रीति सेनगुप्ता की चौदहवीं रचना है जो सन 2002 में प्रकाशित हुई है। इस यात्रावृत्तांत को लेखिका ने चार भागों में बाटा है- जिसमें प्रथम भाग में तुर्किस्तान, दूसरे भाग दूसरे भाग में ब्रुनेई और मलेशिया, तीसरे भाग में इजिप्ट और लेबनान चौथे भाग में पनामा, कनाडा, चीन, तिब्बत और न्यूयॉर्क में इस्लाम धर्म की गतिविधियों का परिचय दिया है। लेखिका के स्वभाव की यह विशेषता है, कि वह जहां जाती है, वहां के धर्म को मान सम्मान देती है। वहां के रीति-रिवाज को समझने में दिलचस्पी दिखाती है। यहां प्रस्तुत ग्रंथ में इस्लाम धर्म की विशेषताओं का वर्णन लेखिका ने किया है। जो उन्हें अपनी इन यात्राओं के अनुभव से प्राप्त हुआ है।

देवो सदा समीपे' : यह प्रीति सेनगुप्ता की पंद्रहवीं रचना है जो आर. आर. सेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद से सन 2003 में प्रकाशित हुई है। इसमें कुल तीन खंड है। लेखिका अपनी यह पुस्तक 'दलाई लामा' को समर्पित करती है। क्योंकि लेखिका का मानना है की, वह शांति के दूत समान हैं। दलाई लामा से संबंधित लेख भी लेखिका इस पुस्तक में लिखती है, साथ ही तिब्बत और समग्र नेपाल की यात्रा लेखिका करती है। इन यात्राओं में वहां के प्रकृति स्वरूप, संस्कृति वह कैसे दुनिया के अन्य स्थलों से भिन्न है, उसका विस्तृत वर्णन लेखिका देती है। माउंट एवरेस्ट के सौन्दर्य का चित्रण प्रीती सेनगुप्ता करती है। कहती है, कि क्यों भगवान को यह देश, यहां की सुंदरता प्रिय नहीं होगी। इसका प्राकृतिक सौंदर्य बहुत ही खूबसूरत है, जो यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

'खिल्यां मारा पगलां' : यह प्रीति सेनगुप्ता की सोलहवीं रचना है जो आर. आर. सेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद से सन 2004 में प्रकाशित हुई है। इसमें कुल सत्रह खंड है। प्रस्तुत यात्रावृत्त मे फिजी, टौंगा, सामोआ, कुक आइसलैंड, सोसाइटी आईलैंड्स, जैसे दक्षिण प्रशांत महासागर के पांच देशों का प्रवास वर्णन है।

'सूतर स्नेहनां' : यह प्रीति सेनगुप्ता की सत्रहवीं रचना है जो आर. आर. सेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद से सन 2005 में प्रकाशित हुई है। इसमें कुल अड़तालीस खंड है। इस यात्रावृत्तांत में लेखिका ने उनके दो बार दक्षिण अफ्रीका के प्रवास का वर्णन किया है। लेखिका 'अफ्रीका महाद्वीप' में सात बार गई है और दस देशों की यात्राएं की है। इन यात्राओं के अनुभव का वर्णन इस पुस्तक में देखने को मिलता है। महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका मे प्रारंभिक दिनों, संघर्ष, आंदोलन का वर्णन भी इस पुस्तक मे है।

'आटली बधी भूमि' : यह प्रीति सेनगुप्ता का अठारहवीं यात्रावृत्तांत है, जो रन्नादे प्रकाशन से सन 2008 में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल तिरालीस खंड है। यह यात्रावृत्त ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस यात्रावृत्तांत में लेखिका ने ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप के आदिवासी समुदायों के सामाजिक स्तिथि का वर्णन किया है। किस तरीके से आदिवासी समूह आज भी अपने आप को बचाए हुए हैं। अपने संस्कृति को बचाए हुए इसका जिक्र लेखिका ने पुस्तक में किया है।

'अपराजिता' : यह प्रीति सेनगुप्ता की उन्नीसवीं रचना है, जो रंगद्वार प्रकाशन से सन 2007 में प्रकाशित हुई है। इसमें कुल आठ खंड है। प्रस्तुत यात्रावृत्त में प्रीति सेनगुप्ता के सातों महाद्वीप की यात्राओं के लेख

के कुछ विशेष अंश को शामिल किया गया है। उनके रोचक यात्रा अनुभवों, मुख्य बातों को इस पुस्तक में शामिल किया गया है तथा प्रीति सेनगुप्ता के चयनित लेखों का समावेश इस पुस्तक में किया गया है।

'संबंधनी ऋतुओ' : यह प्रीति सेनगुप्ता की बीसवीं रचना है, जो आर. आर. सेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद से सन 2010 में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल छः खंड है। जापान लेखिका का प्रिय देश है। उन्होंने जापान की यात्रा छः बार की है। इन यात्राओं के वर्णन को उन्होंने शीर्षक दिया- संबंधनी ऋतिओं, ऋतुओं के अनुसार उन्होंने जापान का भ्रमण किया है, उन अनुभवों को अलग-अलग ऋतुओं के साथ जोड़कर लेखिका ने वहां के सामाजिक जीवन, सांस्कृतिक परिवेश, पर्यावरणीय आयाम का विश्लेषण किया है।

'अंतः पुरम' : यह प्रीति सेनगुप्ता की इक्कीसवीं रचना है जो सन 2013 में प्रकाशित हुई है। एक छोटा सा देश ताइवान कैसे अपने आप को पड़ोसियों से बचाया हुआ है। चीन की हमेशा उस पर नजर रहती है। उसके ऐतिहासिक प्रसंगो एवं दुनिया के साथ की नीतियों के बारे में बारीकी से वर्णन लेखिका ने यहां किया है। इससे ज्ञात होता है कि प्रीति सेनगुप्ता एक इतिहास की अच्छी जानकार है एवं दुनिया की राजनीति की समझ रखती है।

'जढ मध्ये स्थढ' : यह प्रीति सेनगुप्ता की बाइसवीं रचना है जो आर. आर. सेठनी कंपनी, अहमदाबाद प्रकाशन से सन 2016 में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल चार खंड है। प्रस्तुत यात्रावृत्त में लेखिका ने 'रिज़ॉर्ट कलचर', 'बीच कलचर' का विश्लेषण किया है। यह यात्रा चार समुद्री महाद्वीप पर आधारित है।

'पथ अने पथिक' : यह प्रीति सेनगुप्ता की तेइसवीं रचना है, यह 2016 में प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत यात्रावृत्तांत लेखिका के 'अर्जेंटीना', 'चिली', और 'गयाना' यात्रा पर आधारित है जिसमें लेखिका ने इन देशों के परिवेश, वहां के खान-पान, स्थानीय लोगों के साथ उनके अनुभवों का वर्णन किया है।

3.6 सम्मान :

प्रीति सेनगुप्ता की रचनाओं को प्राप्त पुरस्कार निम्न है-

1. 'पूर्वा' सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार (निबंध, यात्रा निबंध, व्यक्तिगत निबंध, सामान्य ज्ञान, यात्रा, हास्य), गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगरः प्रथम पुरस्कार- 1986

2.1 'दिक दिंगत' सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार (ललित निबंध, यात्रा, व्यक्तिगत निबंध, सामान्य ज्ञान, हास्य), गुजरात साहित्य अकादमी: 1987

2.2 श्री काकासाहेब कालेकर (जीवन-चरित्र, निबंध, यात्रा, संस्मरण) पुरस्कार : गुजराती साहित्य परिषद, अहमदाबाद, प्रथम पुरस्कार - 1989

3. 'सूरज संगे, दक्षिण पंथे' सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार (निबंध, यात्रा, व्यक्तिगत निबंध, सामान्य ज्ञान, हास्य), गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर द्वितीय पुरस्कार - 1989

4. 'अंतिम क्षितिजों' सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार (निबंध, यात्रा साहित्य, व्यक्तिगत निबंध, सामान्य ज्ञान, हास्य), गुजरात साहित्य अकादमी, गाधीनगर, प्रथम पुरस्कार - 1991

5.1 'धवल आलोक, धवल अंधार' सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार (ललित निबंध, यात्रा, व्यक्तिगत निबंध, सामान्य ज्ञान, हास्य) गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर : 1992

5.2 श्री हरिओम आश्रम द्वारा प्रेरित, श्री भगिनी निवेदिता (लेखिका) पुरस्कार : गुजराती साहित्य अकादमी, अहमदाबाद प्रथम पुरस्कार - 1992

गुजराती साहित्य : पुरस्कार (लेखिका) श्री भगिनी निवेदिता श्री हरिओम आश्रम से प्रेरित परिषद, अहमदाबाद प्रथम पुरस्कार : 1992

6. 'किनारे किनारे' सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार (निबंध, यात्रा साहित्य, व्यक्तिगत निबंध, सामान्य ज्ञान, हास्य), गुजरात साहित्य अकादमी द्वितीय पुरस्कार: 1995

7. 'नमनी वहे छे नदी' सनतकुमारी मेहता सर्वश्रेष्ठ लेखिका पुरस्कार: गुजरात साहित्य सभा, अहमदाबाद: 1998-99-2000

8. विश्व गुर्जरी गौरव पुरस्कार, विश्व गुर्जरी संस्थान, अहमदाबादः 1993

9. कुमार सुवर्णचंद्रक, कुमार ट्रस्ट, अहमदाबाद: 2006

10. सम्पूर्ण साहित्य सृजन के संबंध में श्री चुन्नीलाल वेलजी मेहता पुरस्कार : गुजरात लिटरेरी अकादमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका, अमेरिका : 2006

3.7 गुजराती यात्रा साहित्य के विकास में प्रीति सेनगुप्ता का योगदान

गुजराती लोगों के लिए कहा जाता है कि, गुजराती इस पृथ्वी के पहले यात्री रहे होंगे। क्योंकि गुजरात के लोगों के स्वभाव में घुम्मकड़ी होती है। भारत के किसी भी राज्य में जो आपको गुजराती हर जगह मिल जाएंगे दुनिया के किसी भी देश में वहां आपको गुजराती लोग देखने को मिल जाएंगे। क्योंकि गुजराती लोगों के लिए कहा गया है यात्रा पहले से गुजरातियों के लिए प्रिय रही है। क्योंकि वह व्यापारिक कौम थी और व्यापार के लिए उन्होंने देश-विदेश की यात्राएं की। गुजराती साहित्य में यात्रा साहित्य इसलिए भी एक प्रमुख विधा के रूप में उसको आत्मसात किया जाता है। क्योंकि यहां की प्रजा को यात्रा करना अत्यंत प्रिय है। पहले धार्मिक एवं व्यापारिक उद्देश्य से यात्रा करते थे अब यात्रा के अनेक प्रयोजन हैं। अनेक प्रकार है तो पहले से यात्रा करने का स्वभाव होने के कारण गुजरातियों का यह बहुत पहले से प्रिय विषय रहा है।

दिव्य भास्कर जैसे प्रचलित समाचार पत्र के माध्यम से प्रीति सेनगुप्ता गुजरात के घर-घर तक ख्याति प्राप्त लेखिका के रूप में स्थापित है। गुजराती लोग जो थोड़ी भी यात्रा में रुचि रखते हैं उन्हें दिव्या भास्कर समाचार पत्र में कलम के माध्यम से लेखिका के प्रवास वर्णन पढ़ने का अवसर जरूर मिला होगा।

इसके पूर्व भी गुजराती साहित्य में प्रीति सेनगुप्ता के लेखन को लेकर कई लोगों ने कार्य किया है। उन पर अलग से सेमिनार का आयोजन भी हुआ है। उनको पढ़कर ऐसा लगता है कि गुजराती यात्रा साहित्य विधा में आज तक कोई यात्रा साहित्यकार हुआ, ना वर्तमान में है। ऐसा में दावे के साथ कह सकता हूं गुजरात के अनेक विश्वविद्यालय में यात्रा साहित्य का प्रश्न पत्र, पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जाता है। गुजराती साहित्य का प्रत्येक विद्यार्थी तो उनको जानता ही है और गुजराती साहित्य के यात्रा विधा में अगर किसी साहित्यकार का नाम उच्च कोटी की श्रेणी में आता है, तो वह एकमात्र प्रीति सेनगुप्ता का ही आता है। सभी जगह उस पर चर्चा होती है और गुजरात के बड़े-बड़े साहित्यकार उन पर आलोचनात्मक लेखन करते हैं। वो भी कभी न कभी प्रीति सेनगुप्ता का जिक्र करते है। वर्तमान में कई लेखक है जो यात्रा साहित्य पर कार्य कर रहे है। उनमें प्रदीप चौहान, राजेश मकवाना, सेलाट यह गुजराती साहित्य के बड़े नाम है। इन्होंने भी कहा की यात्रा साहित्य पर हमने जो किताब लिखी उसकी मूल प्रेरणा हमें प्रीति सेनगुप्ता के कारण मिली। उनका यात्रा साहित्य पढ़ना हमें बहुत अच्छा लगता है। इस तरह गुजरात में बड़े-बड़े साहित्यकार कह रहे हैं प्रीति सेनगुप्ता एक जानी मानी यात्रा लेखिका है। प्रीति सेनगुप्ता के दो-तीन पुस्तकों का अनुवाद हिंदी एवं अंग्रेजी भाषाओं में हुआ है। वह भारत भर में एक अच्छी यात्रा

साहित्यकार के रूप में जानी पहचानी जाती है और उनके संपर्क पूरे देश में हैं। अनेक पुरस्कारों से उन्हें नवाजा गया है। यात्रा साहित्य पर लिखने की एक दृष्टि होती है, एक सोच होती है, और मेरे नजर से गुजराती यात्रा साहित्य में सबसे बेहतर यात्रा लेखिका प्रीति सेनगुप्ता है। प्रीति जी ने विश्व के 116 देशों की यात्राएं की है। जापान उनका प्रिय देश है। जापान की यात्रा वह छ बार कर चुकी है। उत्तर ध्रुव पर जाने वाली भारत की पहली महिला प्रीति सेनगुप्ता है। उत्तर ध्रुव पर तापमान माइनस 50 डिग्री तक चला जाता है। ऐसे स्थानों की यात्रा प्रीति जी निडरता से करती है। उनकी इस साहसिकता के कारण तत्कालीन प्रधानमंत्री 'नरसिंहराव ने उन्हें दिल्ली बुलाकर सम्मानित किया था। इस यात्रा की रिपोर्ट नैशनल टेलीविजन पर दिखाई गयी थी। प्रीति सेनगुप्ता की यह यात्राएं वर्तमान मे युवाओं के लिए साहस की प्रेरणा देती है।

प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य मे विविध आयाम देखने को मिलते है। उन्होंने साहित्य, स्थापत्य, वहां की आबोहवा को लेकर लिखा। प्रकृति का वर्णन उनके प्रत्येक यात्रा वृत्तान्त मे देखने को मिलता है। उन्होंने साउथ एशिया को लेकर लिखा, यूरोप पर लिखा, अमेरिका पर लिखा, अरब देशों पर लिखा, जापान जैसे देशों को लेकर लिखा, ऑस्ट्रेलिया महादीप पर लिखा। अफ्रीका के देशों पर लिखा। उन्होंने कहा की मेरा मानना है की, दुनिया मे साढ़े सात महाखंड है। साढ़े सातवां महाखंड लेखिका ने उत्तर ध्रुव को कहां। इतनी विविधता भरी यात्राएं एवं लेखन गुजराती के किसी अन्य साहित्यकार ने किया हो ऐसा मेरी नजर में नहीं आया।

3.8 प्रीति सेनगुप्ता का साक्षात्कार

प्रश्न- साहित्यिक लेखन में आपने यात्रा लेखन शैली को ही क्यों पसंद किया ?

उत्तर : मैं बचपन से, खैर हमारी फैमिली में तो बहुत सालों से मेरे जन्म के पहले से मेरे मां-बाप भारत में घूमते थे। मेरे जींन में था घूमना फिरना और छोटे थे तब से अहमदाबाद के बाहर, साल में दो से तीन बार हम कहीं ना कहीं जाते थे। और मैं प्राइमरी स्कूल से लिखती भी थी। छोटे बच्चों की कहानियां कविताएं और स्कूल में आने के बाद मैंने ऐसे ट्रैवल के ऊपर भी लिखने का शुरू किया। तो मेरी जो लेखन की स्टाइल है, वह डिस्क्रिप्टिव रही है, जिसे वर्णनात्मक कहते हैं। ऐसा नहीं था कि मुझे ट्रैवल के ऊपर बहुत सोच कर, बहुत कंस्यूसियली मैंने यह चुना है। ऐसा नहीं है पर यह अंदर से ही आया। मैं जहां गई उसके बारे में मुझे जैसे लिखना था डिस्क्राइब करना था बताना था। शायद ऐसा पब्लिकेशन का भी कुछ ख्याल नहीं था। जो हुआ सब नेचरली ही हुआ।

प्रश्न- यात्रा साहित्य में आपका पसंदीदा लेखक जिससे आपने प्रेरणा ली हो ?

उत्तर : आप प्रेरणा की बात कर रहे हैं तो मैंने किसी की शैली को इंडिकेट नहीं किया। मेरी जो लिखने की शैली है, मेरा जो लिखने का कंटेंट है वह मेरा अपना है। मगर मैंने कई लोगों के ट्रैवल को पढ़ा है। मैंने अंग्रेजी में कई लोगों को पढ़ा है, हिंदी में मैंने निर्मल वर्मा की किताब पढ़ी है। गुजराती में कुछ लोगों को पढ़ा है लाइक कालेलकर। वह तो बहुत बड़ा नाम है। बचपन से उनको पढ़ने आए थे। बट गुजराती में जो लिखा गया है उसमें खास मेरा विश्वास नहीं है। क्योंकि क्या है कि लिखने की सिर्फ बात नहीं मगर एटीट्यूड की और क्या तुम देखते हो, क्या तुम समझते हो, उसकी बात है। मैं अकेले यात्रा पर जाती हूं। उसके कारण मेरा जो ध्यान है ना वह मुझ पर नहीं रहता, वह जगह के ऊपर रहता है तो उसके कारण मेरा लिखने का भी ऐसा ही बनता है, कि उसमें मेरी बात नहीं आती जगह की बात ज्यादा आती है। अंग्रेजी में भी मैंने ट्रैवलॉग पढ़े जैसे- 'जेन मॉरिस' करके एक लेडी राइटर थी फिर 'ब्रूस चैटविन' और 'पॉल थेरॉक्स' ट्रैवल करके बहुत इंटरेस्टिंग किताबें लिखते हैं। बट उसका है कि जहां जाते हैं ना उसे जगह को किसी न किसी तरह क्रिटिसाइज करते हैं। कुछ जैसे उसको पसंद नहीं आया कुछ चीज पसंद नहीं आती तो डेथ एटीट्यूड आई डॉन्ट लाइक। आई अवॉइड कभी मुझे कई जगह पर कुछ पसंद नहीं भी आया ना तो मैं उसके बारे में लिखती ही नहीं हूं। मैं सोचती हूं कि इतना मेरा हक भी नहीं बनता है और कुछ चंद

दिनों के लिए जो उस जगह को शायद मैं काफी पहचान भी नहीं पा रही हूं। तो पढ़ती हूं मैं लोगों का मगर यात्रा लेखन लिखने का जो ख्याल होता है वह मेरा अपना होता है।

प्रश्न- यात्रा के दो स्वरूप है एकांकी यात्रा और वर्गगत यात्रा आपने एकांकी यात्रा को ही क्यों पसंद किया ?

उत्तर : मुझे यह प्रश्न कई बार पूछा जाता है, अकेले में डर नहीं लगता, बोर नहीं होते ? नहीं मैं बोर तो कभी भी नहीं होती। किसी तरह से मैं बोर नहीं होती यह मेरी जिद है किसी भी हिसाब से मैं बोर नहीं होती। जब मैं घर में थी, बड़ी हो रही थी तब तो अकेले कहीं भेज नहीं रहे थे। मुझे अकेले कहीं जाने नहीं दे रहे थे तो ऐसा नहीं था कि मुझे सिखाया गया। कही जाना होता तो अकेले मत जाओ करके रोका गया। फिर जब मैं आगे पढ़ने के लिए अमेरिका गई तब मैंने अपने आप को कहा कि आई विल नॉट नेगलेक्ट एनीथिंग यू नो अपने यहां गुजराती घरों में हो या खास ऑल ओवर इंडिया के घरों में लड़कियों को ना बहुत कहते हैं। यह मत करो, ऐसा मत बोलो, यहां मत जाओ उनके साथ मत जाओ करके, तो मैंने तय किया कि मैं किसी भी चीज को ना से शुरू नहीं करूंगी और फिर अमेरिका में यह हुआ भारत में तो मैं बहुत घूमी थी कई बार भारत के जगह पर में गई हुई थी। मगर मुझे अमेरिका जाने के बाद बहुत ही होम सिकनेस लगी। मेरा एक भी दिन ऐसा नहीं गया कि मुझे रोना ना आया हो बहुत ही दुख रहा मेरे मन में बहुत सिकनेस रही भारत के लिए। फिर मेरा पढ़ाई पूरी हुई। और मैं भारत वापस आ गई विदीन वन एंड हॉफ ईयर के बीच में तो अमेरिका जाने के बाद फिर से मैं भारत में आकर तीन महीने रही जब तक अच्छा लगा। फिर वापस गई तब सब सामान रख के एक छोटा सा थैला लेकर तीन महीने तक में बस से पूरे अमेरिका में घूमी। तो कारण यह था मेरे मन में ख्याल आया, कि मुझे इस भूमि को देखना पड़ेगा। मुझे उस देश का कुछ पसंद नहीं आ रहा था। अपना ही देश महान है, यहां इंडिया के जैसा कुछ नहीं है ऐसा लगता था। तो ऐसा सोचना बचपना था। अब तो मैं किसी देश को कंपेयर भी नहीं करती और किसी के बारे में ऐसा कुछ भी नहीं सोचती। क्योंकि जो देश जैसा है वह वैसा ही है, फिर मैंने सोचा कि यह देश यह धरती यहां की भूमि मुझे देखनी पड़ेगी। तब मैं इस देश को समझुंगी और हुआ भी वैसा, जब तीन महीने में बस से घूमी तो तरह-तरह की जगह पर मैं गई और ऐसे ही जाकर होटल ढूंढती रही अपने आप पहली बार जिंदगी में अकेले मैंने किया। मगर जो वहां की भूमि का सौंदर्य है, विविधता है, उसमें तथा वास इट इस रियली स्टनिंग इट इस वेरी ब्यूटीफुल ऑल ओवर द वर्ल्ड ऑफ कोर्स मान्य कंट्रीज आर वेरी ब्यूटीफुल आल्सो इन इंडिया। तब मैं समझ पाई कि अमेरिका की धरती अद्भुत है यहां की धरती बहुत खूबसूरत है।

तब जाकर जी में कुछ होश आया। कुछ अच्छा लगने लगा यह जगह को मैं समझ पाई और एक यह भी था कि मैंने सोचा अमेरिका में तो एक ही भाषा है, अपने इंडिया में तो कितनी सारी भाषाएं हैं यहां बस एक अंग्रेजी तो घूमते-घूमते देश में दूसरी जगह पर मैंने जाकर देखा कि एक भाषा जरूर है लेकिन उसका बोलने का ढंग, कुछ शब्द के अर्थ भी अलग से हैं। प्रोनाउंस अलग से है तो मैं देख पाई की भाषा एक है मगर उसमें भी बहुत ही विविधता है। अंग्रेजी एक है यह बात भी मुझे बहुत अच्छी लगी तो इसलिए धीरे-धीरे मेरा मन अमेरिका के साथ जुड़ने लगा और फिर मैं वहीं पर रह गयी।

न्यूयॉर्क में रहकर मेरा काफी विकास हुआ। मन के अंदर का विकास मेरा न्यूयॉर्क जाने के कारण हुआ। क्योंकि दुनिया का सब कुछ न्यूयॉर्क में है। आप कोई भी फील्ड के हो आपको आपकी फील्ड का न्यूयॉर्क में सब कुछ मिल जाएगा। मैं थोड़ी ज्यादा आर्ट ओरिएंटेड हूं, तो आर्ट फील्ड में न्यूयॉर्क इस द बेस्ट इन वर्ल्ड। तो मैं बहुत समझने लगी बहुत कुछ सीखी बहुत कुछ पढ़ा, बहुत सारे लोगों से मिलना हुआ आर्टिस्ट हो राइटर हो थिएटर डायरेक्टर्स हो एक्टर हो इन सभी को मिलने के मौके मुझे मिलते रहे तो इतने समय में मेरा बहुत ग्रोथ हुआ।

प्रश्न- यात्रा के पूर्व आप किस तरह की तैयारीयां करते हैं ?

उत्तर : पहले जब शुरू-शुरू में जहां जाना होता था उन जगहों के बारे में मैं गाइड बुक से थोड़ा बहुत पढ़ लेती थी। उन गाइड बुक में कहां से कहां जाना है, कैसे जाना है, वह सारी जानकारी नहीं थी। वह केवल डिस्क्रिप्टिव थी। यानी उस स्थान विशेष की केवल जानकारी उन पुस्तकों में होती थी। मैं उन्हें पढ़ती थी पढ़ने के बाद ऐसा होता था कि यह जितनी भी जगह है सभी जगह पर मुझे जाना है तब से भिन्न-भिन्न जगह के बारे में मैं पढ़ने लगी और पहली बार शायद पहले या दूसरी बार बोलो वह गाइड बुक को मैं साथ में लेकर गई। फिर तीसरी बार मैं निकली तब मैंने गाइड बुक से नोट्स बना लिए, उसके बाद चौथी बार पांचवीं बार जहां घूमने गई तब मैंने बुक नोट्स कुछ भी नहीं किया तो मेरी तैयारी धीरे-धीरे कम होती गई मेरा विश्वास अब उस जगह, उन स्थानों पर आधारित होने लगा कि वह जगह जैसी है, वैसी वह मुझे वेलकम करेगी और वह जगह जैसी है मैं उसे वैसे ही अपनाऊंगी। उसके बारे में मैं समझ कर फिर उसे अपनाऊंगी तो ऐसे में मेरी तैयारी बहुत कम हो गई होटल बुकिंग तो मैं पहले से नहीं करती थी वहां जाकर ढूंढती थी तो एक छोटा चैलेंज भी उसमें रहता था।

प्रश्न- दुनिया का कोई ऐसा स्थान जहां आप जाना चाहती थी, लेकिन नहीं जा पाई ?

उत्तर : मैं काफी देश में गयी हूं फिर भी कुछ और देश है जहां नहीं जा पाई एक-दो देशों में तो वीजा नहीं है जैसे सऊदी अरब में वीजा नहीं है। मैं मक्का नहीं जा सकती। मुझे मक्का जाने के लिए मुस्लिम बनना पड़ेगा। कुरान का शिक्षण लेना पड़ेगा, तो घूमने का वहां वीजा नहीं है। ऐसे अफगानिस्तान में वीजा नहीं है मुझे वेस्ट अफ्रीका में कुछ देशों में जाना है जैसे सेनेगल, हो आइवरी कोस्ट, हो माली भी जाना चाहती हुं बट अफ्रीका महाद्वीप पर में नौ बार गई हूं। अफ्रीका महाद्वीप के कई देशों में प्रवास किया है मगर वेस्ट अफ्रीका के देशों में जाना थोड़ा मुश्किल नहीं लेकिन कम लोग जाते हैं। सुविधा भी कम है और सब कुछ ध्यान में रखते हुए मैं केवल महिला नहीं हूं मैं एक शादीशुदा महिला हूं। मेरे पति मेरे यात्रा प्रवास का घुम्मकड़ी स्वभाव का बहुत सम्मान करते हैं। लेकिन मैं नहीं चाहती कि उन्हें मेरी किसी भी तरह की चिंता हो। उनको बहुत तकलीफ हो, बहुत दिक्कत हो, बहुत चिंता हो ऐसा करके घूमने जाने का मेरा कोई शौक नहीं है। जिद्द करके जाना मैं नहीं चाहती। एक बार मैंने जिद्द की थी जब मैं नॉर्थ पोल गई थी। क्योंकि दक्षिण तो अंटार्कटिका से वापस आते समय मेरे मेरा जहाज टूट गया था और हम सब मरते-मरते बचे थे। उसे साहस बोलो या कुछ और 'धवल आलोक धवन अंधार' में इसका जिक्र भी है। वह बहुत ही बड़ा हादसा था। उसके बाद जब मैंने नॉर्थ पोल पर जाने का सोचा, तब मेरे पति ने कहा था और पहली बार कहा था कि मत जाओ। क्योंकि एक बार तो मैं मरते-मरते बची हूं। और अगले वर्ष फिर से जाऊ तब मैंने कहा था कि घर का लॉक बदल दो मगर मैं जाऊंगी। एक बार मैंने ऐसी बात की थी। ऐसा कहते हैं ना आपके पास एक ट्रंप कार्ड होता है, आप उसका उपयोग जीवन में एक बार कर सकते हैं तो वह मेरा ट्रंप कार्ड था। कहते हैं ना आखरी संभावना होती है उस एक निर्णय की अगर जीत गए बाजी तो वह एक बार होता है। तो वह मेरा ट्रंप कार्ड था। उसे मैंने रख दिया उसके बाद मैं दुबारा कभी ऐसा नहीं कर सकती हूं। और यह पहले भी नहीं कहा और अभी भी नहीं कहती लेकिन उस वक्त मैंने कहा था। क्योंकि साथ खंडों पर में जाकर आई थी। उसके बाद मैंने सोचा कि उत्तर ध्रुव का जो प्रदेश है प्रदेश तो नहीं समुद्र है पानी है मगर इतना बड़ा है कि उसको साढ़े सातवाँ महाद्वीप कहना चाहिए। मेरे हिसाब से दुनिया में साढ़े सात खंड है। मैंने अपने आप साढ़े सातवाँ खंड बनाया जो भी हो मेरे लिए, मैं भारत का झंडा भी अपने साथ लेकर गई थी मैंने भारत का फ्लैग वहां लगाया।

प्रश्न- आपने गुजरात के प्रसिद्ध समाचार पत्रों के लिए स्तंभ लेखन किया है, उसकी शुरुआत कब और कैसे हुई ?

उत्तर : खैर न्यूज़ पेपर में, मैं बहुत सालों से लिख रही हूं और गुजरात के पेपर में लिखने से पहले मैंने मुंबई के पेपर में लिखना शुरू किया था। 'जन्मभूमि प्रवासी' में मैंने कई वर्षों तक लिखा करीब ग्यारह वर्षों तक मैंने प्रवास पर लिखा, और उसके बाद मेरी दो नवलकथा हुई है। वह भी 'जन्मभूमि प्रवासी' में सीरियलाइस हुई है। और गुजरात के अहमदाबाद में 'दिव्य भास्कर' में लगातार लिखती रही। वो कॉलम भी कई वर्षों तक चला। फिर अब करीब एक-दो वर्षों से उन्होंने वो प्रवास वाला कॉलम छोड़ दिया है।

प्रश्न- आपकी यात्रा के कुछ बेहतरीन प्रसंग और कुछ कटु अनुभव के बारे में बताइए ?

उत्तर : अकेली होती हूं तो कुछ तकलीफें होती है, जैसे यू नो, कहीं पर होटल नहीं देंगे, अकेली लड़की है तो होटल नहीं देंगे। रिसकी बनता है। लेकिन इतने खराब अनुभव नहीं हुए कि जिसके कारण मुझे प्रवास करना छोड़ देना पड़ा। इतना खराब हादसा कभी भी नहीं हुआ। मैं भाग्यशाली हूं इतनी बुराई मेरे साथ नहीं हुई जीतने की हर रोज यहां-वहां सुनने मिलती है। आपको प्रवास के दौरान खुद को संभालना पड़ता है। मुझे किसी का डर नहीं है। मगर थोड़ा संभालना चाहिए, अनजान जगह पर रात को मैं बाहर बहुत कम निकलती हूं। अनजान जगह पर वहां के लोग ही बाहर नहीं होते हैं। सात बजे अगर छोटा गांव शहर बंद हो जाता है तो फिर मेरे अकेले घूमने जाने का मतलब क्या है। तो वह नहीं करती मैं और अकेले में मैं कहीं बाहर भी नहीं जाती अकेले में शाम को किसी के साथ खाने के नाम पर भी बाहर नहीं जाती। ऐसे कहने वाले मिलते हैं कि चलो वहां बैठकर खाएंगे या बैठकर ड्रिंक पियेंगे वगैरा। तो मैं रात को नहीं जाती।

एक बेहतरीन प्रसंग के बारे में भी बताती चलू। मैं मोरक्को में थी मोरक्को नॉर्दर्न अफ्रीका का देश है राइट और मुस्लिम देश है वैसे मुझे कोई डर नहीं लगा लेकिन अकेली लड़की देखकर अकेली लड़की घूम रही है। दूसरे देश की लड़की है ऐसा जानकार लोगों के नजरों में आश्चर्य तो होता है एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए मैं तो बस लेती हूं। मैं पब्लिक ट्रांसपोर्टेशन का उपयोग करती हूं एक बस में मैं जा रही थी और एक गाइड बुक में मैंने पढ़ा था एक दूर के गांव पर एक गज़ीबो मंडप बनाया हुआ है। वह मुझे देखना था तो मैंने सोचा चलो उसे गांव में जाती हूं। मैं मंडप देखूँगी तो बस में बैठी थी तो मेरे बाजू वाले पैसेंजर बदलते रहे फिर एक यंग व्यक्ति आकर बैठा। मैं अधिक लंबा सफर होने के कारण थोड़ा सो भी जा रही थी। वह व्यक्ति समझा होगा कि मैं इंडियन हूं फिर मेरी आंख खुली मेरे पास चिप्स का पैकेट था। मैंने पोटैटो चिप्स का पैकेट निकाला, एक पोलाइटनेस होता है की बाजू में अगर कोई बैठा है तो उसे ऑफर करो तो मैंने उसको ऐसे ऑफर किया कि लो तुम तो वह पल था जब वह मुझसे बात करने के लिए प्रोत्साहित हुआ। कहां से आए हो, फिर बोला कहां जा रही हो तो मैंने कहा उसे गांव में मुझे गज़ीबो

देखना है। तो वो बोला कि मेरा गांव नजदीक है तो आप हमारे गांव में आओ। मैंने कहा ठीक है मैं सोचूंगी मुझे लगा ऐसे कैसे कोई बुलाता है और मैं जाऊं ऐसा तो मैं करती नहीं हूं। ज्यादातर और फिर से मुझे थोड़ी नींद आ गई मैं सो गई फिर उसका स्टॉप आने वाला था। मेरी आंख खुली वह देखकर बोला 'मैडम विल यू कम टू माय विलेज' अभी दो-तीन मिनट में मेरा स्टॉप आएगा तभी इंसटैंटली मैंने सोचा कि हां आऊंगी मुझे संभालना चाहिए ऐस ए वूमेन, लेकिन एस अ ह्यूमन बीइंग आई ट्रस्ट बिलीव इन पीपल, आई ट्रस्ट इन पीपल, कोई खराब ही किसी का उद्देश्य होगा ऐसा मैं क्यों समझू। खराब उद्देश्य न भी हो तो मैंने कहा ठीक है आऊंगी मगर तुम्हारे गांव में रहने की जगह है होटल है बोला हां है। तो वो पहले मुझे एक 'इन' धर्मशाला जैसी जगह थी वहां ले गया मैंने कहा कैमरा है कमरा था मैंने सामान भी रखा पैसे भी दे दिए फिर बोला कि मैं अभी आता हूं। आप वेट कीजिए तो थोड़ी देर बाद आया और उसके साथ एक फ्रेंड को लेकर आया अब मोरक्को देश में क्या है कि अकेली लड़की घूमती नहीं है, और अकेली एक आदमी के साथ भी नहीं जाती है तो वह अपना फ्रेंड लेकर आया कि भाई दो आदमी है मुझे नहीं पता कि क्यों एक आदमी के अलावा दो आदमी के साथ सुरक्षित समझा जाता है। मैंने बोला ठीक है चलो तब वह मुझे गांव के अंदर ले गया वहां बिल्कुल ही रूरल एरिया था वहां उसका घर था बोले मेरे घर में लिए मुझे तो धर्मशाला में रहना ही था मैंने उसके घर के अंदर प्रवेश किया वहां उसकी बहने थी उसके कजिन उसमें कोसिंस को बुला लिया दूसरे उसके भाई भी आ गए जैसे ही उसने दरवाजा खोल बीच में आंगन था आंगन के बीच में एक पेड़ था नारंगी का पेड़ था वह और उसे पर फल भी लगे थे यह दृश्य बहुत ही सुंदर था। किसी का घर है और बीच में ऐसे फल खिले हुए हैं तो थोड़ी देर बाद उसका भाई आया वह जरा ज्यादा बोलता था अब्दुल्ला तो बोला अरे आप हमारे घर नहीं रहेंगे नहीं रहेंगे मैंने कहा क्यों नहीं रहूंगी रहूंगी ना फिर हम धर्मशाला पर गए सामान ले लेने सामान तो थोड़ा सा था मेरे मन में कोई अगस्त नहीं देता है प्यार देता है ना तो वह बिल्कुल नेगलेक्ट नहीं करना चाहिए घबराकर नहीं-नहीं मैं नहीं आऊंगी। ऐसा क्या मैं गई वहां एक रात रही मैंने कहा एक रात रहोगी फिर निकाल के वह गाज़ीबो देखने जाऊंगी तो दूसरी सुबह हुई मैंने कहा अब कितने बजे की बस है तो मैं बस से निकलूं तो वह अब्दुल्ला बोला ओ यू गो यू लीव अस, मैंने कहा मैं लीव करके क्या मैं अकेले जा रही हूं, मैं कहां तुम्हें छोड़कर जा रही हूं मैंने कहा चलो ठीक है नहीं देखना गैजेबो में रहती हूं फिर दूसरी रात भी मैं वहां पर रह गई वहां कुछ करने का नहीं था हां बात यह थी कि उन लोगों ने ना हिंदी फिल्म कुछ अच्छी हुई थी उसे कारण से वह लोग समझ पाए कि मैं इंडियन हूं तब मेरे पास कोई भी इंडियन कपड़े नहीं थे मैं तीन-चार जोड़ी कपड़े लेकर घूमती हूं और सिंपल से कपड़े मैंने सोचा मेरे पास साड़ी होती ना तो सारा गांव मेरे पांव में पड़ जाता बहुत खुश हो

जाते सब खैर वह लोग मुझे घूमने लेकर गए में स्ट्रीट पर घुमाया और कहा कि यू आर द फर्स्ट इंडियन पर्सन तो कम तो और विलेज, आप पहले भारतीय व्यक्ति है जो हमारे गांव में आए हैं मैंने कहा चलो गांव के लोग भी खुश हुए एक इंडियन लड़की आई है करके फिर उनके ग्रैंडपेरेंट्स के घर लेकर गए और कुछ देखने को नहीं था पर ऐसे ही घूमते घूमते फिर ऐसे ही जब तीसरी सुबह हुई तब वह यंग मैन अब्दुल अजीज वह एक स्कूल में पढ़ता था तो उसका ऐसा था कि शनिवार रविवार को वह घर आने को निकाला था तो सोमवार को उसको सुबह स्कूल वापस जाना होता था और मुझे निकल निकल के कॉस्ट पर मोरक्को के नॉर्दर्न तट पर जाकर फिर वहां से शिव लेकर स्पेन जाना था क्योंकि मैं तो स्पेन से जहाज लेकर ही आई थी तो जहाज लेकर मुझे स्पेन पहुंचना था फिर स्पेन से मैड्रिड जाकर मैं डिलीट से ट्रेन लेकर बेल्जियम जाना था वहां से फ्लाई करके न्यूयॉर्क जाना था तो मेरे पास इतना ही टाइम था एक्स्ट्रा दिन टाइम मेरे पास नहीं था।

लेकिन यह जो घटना थी मुझे हमेशा के लिए याद रहेगी ऐसा कभी-कभी बनता है कि परिवारों में मेरा रहना हुआ हो लेकिन मुझे वहां बहुत प्रेम मिला अधिक स्नेह मिला। मुझे काफी अच्छा लगा वह लोग तो फ्रेंच बोलते हैं और थोड़ी अरबी भी थोड़ी अंग्रेजी भी बोलते थे कुछ जोक सुनाते थे एक जगह कॉफी पीने बैठे थे तब उन्होंने जोक्स सुनाया। फिर बोले अब तुम जोक सुनाओ अब मुझे जॉब करना आता नहीं था मुझे एक ही जोक करना आता था मैंने वह सुनाया तब वह लोग ऐसे भी लेकिन यह दो दिन बहुत यादगार रहे हैं। तो घूमने में यह है कि कुछ पाने का नहीं होता है जो वहां की जगह है वहां का समाज है वहां के लोग हैं बस उनको देखो समझो वही पानी का है तो मैं कह सकती हूं कि यह एक अच्छा और यादगार प्रसंग है मेरी यात्राओं का।

प्रश्न- विभिन्न देशों की यात्रा के समय आपने भाषागत बाधाओं का सामना कैसे किया ?

उत्तर : कुछ-कुछ भाषा मैंने सीखी जैसे स्पेनिश है, फ्रेंच है, इटालियन यूरोप में इतनी भाषाएं हैं और जापानी भाषा भी मैंने सीखी जापान तो मेरा बहुत प्रिय देश है। मैं जापान नौ बार गई हूं, थोड़ी जापानी भी जानती हूं नॉर्मल व्यवहार में जो भी बोला जाता है उसे समझ सकती हुं बोल सकती हुं अंग्रेजी का व्यवहार बहुत जगह पर होता है। छोटा-मोटा थोड़ा बहुत कुछ ना कुछ अंग्रेजी ज्यादातर जगहों पर बोली जाती है कुछ शब्द सभी जगह बड़ा है, जैसे- ब्रेड कॉफी तो हुआ यह की किसी के साथ बहुत लंबी बात नहीं हो पाई बहुत दिन मेरे ऐसे गुजरे हैं कि दिन में मैं पाँच मिनट भी बोली हूं।

प्रश्न- कोरोना काल में एक लेखिका के रूप में आपके क्या अनुभव रहे है, जब पूरी दुनिया थम गई थी तब एक यात्रा लेखिका क्या सोच रही थी ?

उत्तर : यात्रा लेखिका बहुत कुछ सोच रही थी। जहां-जहां यात्रा की है उनको मैं बहुत प्यार से याद कर रही थी कि यह यहां में गई थी। वह जगह कैसी होगी, वह लोग क्या कर रहे होंगे क्योंकि कई देशों में बहुत खाना खराबी हुई बहुत से परिवार प्रभावित हुए लोगों को बहुत हैरान होना पड़ा। तो मैं वही सोचती रहती थी और उस वक्त कहीं जा नहीं पा रही हूं करके मेरे जेहन में कोई तकलीफ नहीं थी। बल्कि 2020 में मैंने एक 'बहुत ही खुशी की आनंद की' नवलकथा लिखी।

मेरे दिमाग का एक हिस्सा तनाव में था लेकिन दिमाग का दूसरा हिस्सा पूरा आनंदित था और बहुत ही अच्छी डायसपोरा नवलकथा में लिख पाई तो वह जो हुआ वह मेरे लिए इतना कठिन नहीं था लेकिन मुझे घर में रहना भी उतना ही पसंद है जितना दुनिया की यात्रा करना घूमना।

प्रश्न- एक स्त्री के रूप में आप जिन स्थानों पर गए वहां लोग जाने से डरते हैं - आपके भीतर इतनी साहसिकता कैसे हैं ?

उत्तर : जैसा मैंने पहले भी कहा कि मुझे घर से सिखाया नहीं गया था। कभी भी मत घबराना और सबके ऊपर विश्वास रखना ऐसा सब मुझे सिखाया नहीं गया था। मेरे मन में विश्वास पैदा हो गया और इसी कारण मेरे अंदर डर जैसा कुछ नहीं रहा। मैं जहां भी गई मैं बिल्कुल भी घबराई ही नहीं, कई बार ऐसा हुआ है कि जैसे साउथ अफ्रीका में घूम रही थी। ज्यादातर तो मैं चलती हूं एक बार में जोहानिसबर्ग के लाइब्रेरी में गई कुछ समय मैं वहां बिताया बाहर निकली करीब साढ़े पाँच बजे होंगे शाम के बहुत देर भी नहीं हुई थी देखा तो सारे रास्ते खाली थे। मैंने कहा सारे लोग कहां गए साढ़े पाँच के बाद ऑफिस से बंद हो गई पांच के बाद लोग निकालकर फटाफट अपने-अपने घर की तरफ चल पड़े। लकिली में निकली सही टाइम पर क्योंकि आखिरी बस थी जाने की अगर वह आखिरी बस नहीं मिलती तो फिर तब मैं क्या करती लेकिन मेरे दिमाग में हमेशा प्लान 'बी' भी होता है। यह नहीं तो फिर क्या और साउथ अफ्रीका में तो मैं काफी घूमी हूं। मैं कई मिनी बसों में भी घूमी हूं। मुझे कोई डर का ख्याल नहीं आता है। एक बहुत मजे का वाक्या बना। 'आई वेंट टू मडागास्कर', जोहानिसबर्ग से फ्लाइट लेकर मडागास्कर गयी। मडागास्कर में कोई पांच-छः दिन रहकर फ्लाइट थी। दोपहर तीन बजे की, तो मैं एयरपोर्ट पहुंच गयी। छोटा सा एयरपोर्ट था। सात घंटे फ्लाइट लेट हुई। तीन बजे के बदले रात के दस बजे तो निकली जोहानिसबर्ग जाने के लिए। फिर

पहुंची होगी रात साढ़े बारह बजे, पोने एक बजे। मैंने कहा अब रात के एक बजे टैक्सी नहीं है वहां। तो मैंने सोचा कोई चार-पांच घंटे वहीं पर बैठी रहूंगी और सुबह चली जाऊंगी। मेरे नसीब से एक टैक्सी वाला वही पास मे खड़ा था। फिर मैंने बताया कि मुझे कहां जाना है, तो वह बोला हां चलिए ले जाता हूं। तो फिर मैं उसके साथ टैक्सी में बैठ गई, और बातें कर रही हूं। मैंने कहा, देखो भाई मेरे पास फोन वॉन कुछ है नहीं, तुम ही हो, मैंने मन में कहा तुम ही हो मेरे भाई। मेरे काले भैया। तुम्हारा ही फोन का उपयोग करो। जोहानिसबर्ग में एक फैमिली है मेरी, मैं उनको फैमिली ही मानती हूं। वहीं पर मुझे जाना था। तो उन्होंने बताया था, की चिंता मत करना रात के दो भी बजेंगे आने में तो भी हम दरवाजा खोलेंगे। तो उनका जो लड़का था। वह करीब पैंतीस साल का होगा, और लॉयर है। मैंने तो ड्राइवर को ही कह कर रखा था, तुम उनको पूछते रहो किस तरह से जाना है। बताते रहो कितने दूर है, वगैरा। मेरे पास तो कुछ इक्विपमेंट नहीं है। फोन नहीं है। दो सवा दो बजे घर तक पहुंचा दिया मुझे। और क्या कहा उसने "इट्स रियली ब्यूटीफुल ही सेयस", क्योंकि मैं बातें करती रही। उसके घर की नहीं, उसके जिंदगी की नहीं, ऐसे ही जनरल बातें। लेकिन उसको कंफर्टेबल जैसा लगे, उसके अपने शहर की बातें। उसके यहां की ट्रैफिक की बातें। उसकी गवर्नमेंट की बातें। उसको बहुत मजा आया, फिर मुझे वहां पहुंचा, तब बोला कि "ओ ईट वास वेरी नाइस ब्रिंगिंग यू हम" दूसरा क्या हुआ, कि जो होस्ट था, होस्ट का लड़का उसने पुलिस को बुला कर रखा था। वहां सारी चीज बहुत डेंजरस है। तो उसको अपना घर खोलकर बाहर दरवाजे के पास खड़ा नहीं रहना था। 'टू रिसीव मी' जब तक पुलिस नहीं आती। तो दो पुलिस वाले थे गाड़ी में। मैंने उनको हाथ दिखाया कि मैं आ गई हूं। मैं ठीक से पहुंच गई हूं। मुझे यह बहुत अच्छा लगा। मैं हंस रही थी, उस लड़के का नाम था मनीष, मैंने कहा मनीष यह जो देश है, वह मेरा तो अपना देश नहीं है, दूसरों का देश है, मेरे साथ अनजान ड्राइवर है, और उसके साथ में रात को एक, डेढ़ बजे कई अनजान रास्तों पर आ रही हूं। तो मुझे एक बार भी विचार नहीं आया कि मुझे घबराना चाहिए। बिल्कुल ख्याल नहीं आया। मुझे वह व्यक्ति कहीं ले जाकर, मेरा खून भी कर सकता था। लेकिन मुझे ऐसा कोई डर नहीं लगा। ना ही मैंने उसके बारे में ऐसा कुछ गलत सोचा।

तो मैं हस रही थी कि, ये तुम्हारा अपना घर है, तुम्हारा देश है फिर भी इतना घबरा रहे हो। और मुझे सूझ भी नहीं, कि मुझे घबराना चाहिए। 'इट्स काइंड आफ नाइस टू बिलीव इन पीपल, दे अलसो नीड ईट, सम स्ट्रेंजर्स विल बिलीव इन देम'।

प्रश्न- यात्रा साहित्य की दशा और दिशा पर आपके मत –

उत्तर : मेरे पास अनेक यात्रावृत्तांत आते हैं, मैं देखती हूं अकेले जाने वालों की संख्या कम है और जगह को देखने का समझने का तरीका सीमित रहता है ऐसा मुझे लगता है। मेरा ऐसा मानना है कि जब अपने घर से अपने देश से निकल कर कहीं और जाओ तब अपने आप को थोड़ा भूलना होता है वहां क्या है कैसा है यह सब उस स्थान की यात्रा करने पर ही मालूम पड़ता है। हम वहां गए क्या खाना खाया खाना अच्छा था महंगा था ऐसी चीजों में ख्याल रहता है ऐसा यात्रा लेखन यात्रा की रोचकता को कम करता है।

प्रश्न- प्रीति सेनगुप्ता 26 वर्ष की एक युवा प्रीति शाह को जीवन यात्रा के संदर्भ में क्या सलाह देना चाहेगी ?

उत्तर : जो किया है वही फिर से करते रहो ऐसे ही जिया मुझे कुछ भी चेंज नहीं करना। अमेरिका जाकर मैंने करियर का कुछ सोचा नहीं था करियर के पीछे में भागी नहीं। करियर के लिए मैंने कोई अधिक प्रयत्न भी नहीं किया कर सकती थी मैं कैरियर बना सकती थी मैं। लेकिन मुझे था कि दुनिया देखनी है बस मुझे विश्व को समझाना था विश्व को पाने की इच्छा मेरी रही उससे ज्यादा मुझे कुछ नहीं चाहिए था। फिर शादी के बाद तुरंत यानी हमारी मुलाकात तो न्यूयॉर्क में ही हुई और शादी भी वहीं पर हुई शादी के बाद मेरे पति ने कहा कि मुझे तुमसे कोई कार्य नहीं कराना है मुझे सिर्फ तुम्हारा ध्यान रखना है तब से कहा था अभी भी उन्हें याद है कि आई टेक केयर ऑफ यू तो मैंने कहा ठीक है फिर मुझे और कुछ नहीं चाहिए था। पैसे तो रह जाएंगे मेरा समय ही तो बहुत महंगा है समय कीमती है। तो तब से मैं यात्रा करती रही। तेईस साल की थी जब अमेरिका गई थी। तब तो यहां से गई तब कोई मैच्योरिटी नहीं थी कोई फ्रीडम नहीं था। यहां भारत में विचार करने की मुक्ति नहीं देते यू डॉन'टी हैव फ्रीडम टु थिंक इंडिविजुअल विच आई डिड हैव बट इस मस्टेड बीइंग इन मी सम हाउ, ईश्वर कृपा से मुझे वहां जाना मिला और मैंने वहां के स्थान को प्रकृति को सभी को जाना फिर उनसे, उनके सुंदरता से प्रभावित हुई अमेरिका जाने से पहले जब मैं यहां थी यहां मुझे अकेलापन लग रहा था मुझे प्रॉपर्टी यह सब कुछ भी नहीं चाहिए था सो जो चाहिए था वह मिला। मेरी सोच यह थी कि क्या नहीं चाहिए ये पहले समझना चाहिए क्या चाहिए तो चाहत तो बहुत कुछ होती है अरे इसका तो आईफोन चौदह है, मेरा तो ग्यारह ही है यार। जरूरत क्या है ग्यारह हो, जीरो सात हो, तो क्या नहीं चाहिए वह पहले समझना चाहिए।

तो उसके पीछे मत भागो उसके पीछे टाइम भी नहीं बिगड़ेगा ऊर्जा भी नहीं बिगड़ेगी यह फिलोसॉफी मैं मानती हूं। मैं चाहती हूं एक दूसरे को समझो, एक दूसरे को स्नेह करो तो अच्छा है। इससे दुनिया का माहौल भी अच्छा हो जाएगा सोचो पूरी दुनिया में सब खुश है एक दूसरे से खुश है हर जगह हर देश में

'विदीन द कम्युनिटी, विदीन द ग्रुप ऑफ़ पीपल देयर इस इमिटी' ऐसा यहां पर भी है। कितनी अलग-अलग जाती है, कौम है, लोग है कोई एक दूसरे को पसंद नहीं करता ऐसा पूरी दुनिया में है और यह स्थिति बदलनी चाहिए। युवा पीढ़ी को आप लोगों को तो होना चाहिए कि किसी तरह यह स्थिति बदले लोगों में एकता भाईचारे के लिए कुछ तर्क के साथ प्रूफ करें कुछ विज्ञापन करें, कुछ सहनशील बने, कुछ समझदार बने, कुछ सुधरे। तब जाकर हम कह सकेंगे कि हमारी दुनिया एक अच्छी दिशा में जा रही है और सुरक्षित हाथों में है।

आपने मूल्यवान समय साक्षात्कार के लिए निकाला, आपका खूब-खूब आभार मैडम, आपकी जीवन यात्रा से हमें प्रेरणा मिलती है, हम कोशिश करेंगे कि आपके द्वारा युवा पीढ़ी से जो अपेक्षा की जा रही है, उस कदम पर हम आगे बढ़ेंगे। छोटे-छोटे बदलाव के द्वारा यह संभव भी हो सकता है।

धन्यवाद मैडम

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) बिपिन चौधरी, प्रवासिनी प्रीति सेनगुप्ता, पृष्ठ सं.10

2) वही, पृष्ठ सं.10

3) वही पृष्ठ सं.12

4) वही पृष्ठ सं.12

5) प्रीति सेनगुप्ता, पूर्वा, पृष्ठ सं.08

6) वही पृष्ठ सं.35

7) प्रीति सेनगुप्ता, दिक् दिगत, पृष्ठ सं.08

8) प्रीति सेनगुप्ता, सूरज संगे, दक्षिण पंथे, पृष्ठ सं.64

9) वही पृष्ठ सं.163

10) प्रीति सेनगुप्ता, मन तो चंपानु फूल, पृष्ठ सं.03

11) प्रीति सेनगुप्ता, उत्तरोतर, पृष्ठ सं.03